डॉ. कन्हैया साहू 'अमित'
कुटेला (आरंग) छत्तीसगढ़
पिता- स्मृति शेष सीताराम साहू
माता- स्मृति शेष आशादेवी साहू
चलभाष- 9200252055

पढ़ना-लिखना सार है, यही ज्ञान आधार।
पढ़-लिख जो आगे बढ़ा, उसकी जय जयकार।।
उसकी जय जयकार, मिले पग-पग उजियारा।
बढ़े मान-सम्मान, मिटे मन का अँधियारा।।
कहे अमित करजोड़, स्वयं ही निज पथ गढ़ना।
रखो आत्मविश्वास, लगन से लिखना-पढ़ना।।
****

प्यारे बच्चों ध्यान दो, कहता मैं जो बात।
अच्छा है नित खेलना, पर न करो उत्पात।।
पर न करो उत्पात, खेल कुछ ऐसा खेलो।
खुद को रखो सहेज, मजा फिर खुलकर ले लो।।
कहे अमित करजोड़, न खेलो सड़क किनारे।
बीच राह में खेल, खुला खतरा है प्यारे।।
****

पानी पालनहार है, पानी है अनमोल।
पृथ्वी पर पीयूष सम, बूँद-बूँद मधुघोल।।
बूँद-बूँद मधुघोल, पेयजल जीवनदाता।
प्राणतत्व यह नीर, जगत की प्यास बुझाता।।
कहे अमित करजोड़, बचत ही बात सुजानी।
देखभाल उपयोग, व्यर्थ मत खर्चे पानी।।
****

पेड़ लगाएँ मिल सभी, ये हैं प्राणाधार।
मुक्त रूप मिलता हमें, प्रकृति जनित उपहार।।
प्रकृति जनित उपहार, फूल, फल, वायु दवाई।
कपड़ा, लकड़ी, नीर, वृक्ष देता अधिकाई।।
कहे अमित करजोड़, सुरक्षित रखें, बढ़ाएँ।
धरती का श्रृंगार, साथ मिल पेड़ लगाएँ।।
****

पॉलीथिन मत कीजिए, जीवन में उपयोग।
जितनी यह सुविधा लगे, उतनी देती रोग।।
उतनी देती रोग, नष्ट यह कभी न होती।
धरा प्रभावित नित्य, उर्वरा अपनी खोती।
कहे अमित करजोड़, कष्टमय होगा निशिदिन।
करिए बंद प्रयोग, आज से ही पॉलीथिन।।
****

चलता पंखा जोर से, छत पर घूमे गोल।
मिले हवा शीतल सुखद, लगे हमें हिंडोल।
लगे हमें हिंडोल, चैन गर्मी से मिलता।
तन का मिटे थकान, पुष्प सा मन भी खिलता।।
कहे अमित करजोड़, वायु बिन जीवन खलता।
फरफर करता शोर, तेज जब पंखा चलता।।
****

गरमी लगता क्रूर है, जैसे तानाशाह।
चैन नहीं मिलता कहीं, मुख से निकले आह।।
मुख से निकले आह, किसे यह मौसम भाता।
सूरज आँख तरेर, रात दिन कहर बरपाता।।
कहे 'अमित' करजोड़, नहीं बरते यह नरमी।
जल्दी जाये बीत, पसीने वाली गरमी।।
****

हिंदी अपनाएँ सभी, भाषा यही समृद्ध।
अंतर्मन से धारिए, बाल, तरुण 'औ' वृद्ध।।
बाल, तरुण 'औ 'वृद्ध, करें प्रयोग अधिकाधिक।
यही हमारी आन, रखें लगाव प्राणाधिक।।
कहे अमित करजोड़, भारती की यह बिंदी।
सबसे है अनुरोध, सदा अपनाएँ हिंदी।।
****

पटिया पटरी पर चले, सरसर-सरसर रेल।
गजब संतुलन देखिए, चलती ठेलम-ठेल।।
चलती ठेलम-ठेल, हवा से बातें करती।
होतें लाख सवार, ठीक ही ठाँव ठहरती।।
सुंदर लगते नाम, हावड़ा, कुर्ला, हटिया।
तड़तड़-तड़तड़ तेज, भागती सटकर पटिया।।
****

भैया बादल हो कहाँ, आओ लेकर नीर।
हम बच्चों का भी यहाँ, हालत है गंभीर।।
हालत है गंभीर, तनिक न मिले अब राहत।
बरसो जमकर खूब, हमारी भी है चाहत।।
कहे 'अमित' कविराज, भरे फिर ताल -तलैया।
करो न कोई देर, हमारे बादल भैया।।
****